पुस्तक समीक्षा

पुस्तकः **मोइन और राक्षस (Moint and the Monster)**
लेखकः **अनुष्का रविशंकर (अनुवाद पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा)**
प्रकाशकः एकलव्य ई–10 शंकरनगर, बी.डी.ए. कालोनी शिवजीनगर, भोपाल–16
प्रथम संस्करणः 2014, पृष्ठः 104, मूल्यः 85 रुपये

बच्चों के लिए अनेक प्रकार का साहित्य रचा जाता रहा है जिसमें उनकी भावनाओं को प्रधानता दी जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को भूत से डराया जाता रहा है। राक्षस की भी कहानियाँ प्रचलित हैं। भूत और राक्षस के स्वरूप को क्या जीवन्त रूप में देख पाना सम्भव है? और क्या अब भी बच्चों को इन काल्पनिक प्राणियों से अवगत कराना आवश्यक है। हम नहीं सोच पा रहे कि मोइन बालक को राक्षस से क्यों परिचित कराया जा रहा है और 104 पृष्ठ की पुस्तक में यत्र–तत्र राक्षस नियम बाक्स में दिए गए हैं। राक्षस बिस्तर के नीचे से प्रकट होता है, केले खाता है और न जाने क्या क्या करता है। राक्षस नियम 4 पृष्ठ 71 पर दिया है जहाँ राक्षस के बारे में बताया गया है 'कोई राक्षस महिला या पुरुष नहीं होता'। जब मोइन राक्षस से प्रश्न करता है कि तुम लड़की तो नहीं? राक्षस कहता है, ये बेहूदे इन्सानी अन्तर हमारे बीच नहीं होते।' राक्षस भावमीनी आवाज में नाक से गाने लगा। उसकी बोली अजीब, अस्पष्ट, समझ से परे। राक्षस नियम 93 पृष्ठ 84 पर है 'राक्षस इन्सानी दुनिया में प्राप्त किए गए किसी भी अंग को त्याग नहीं सकता'। यहीं पर यह पूछने पर कि क्या तुम दूसरे ग्रह के वासी हो? क्या तुम बाहरी अन्तरिक्ष से आये हो? आगे चलकर मोइन राक्षस को अपनी जेब में ढूँढ लेता है। वह कूद कर निकला और बोला 'तुम नहीं चाहते मैं यहाँ रहूँ। तुम मुझे दूसरे ग्रह भेजना चाहते हो। मैं राक्षस हूँ। कोई गैर दुनियावी जीव नहीं।'

सचमुच बातों को घुमाकर बच्चों पर यही असर डालने का प्रयत्न हुआ है कि राक्षस भी हमारे ही समाज के प्राणी हैं।

पुस्तकः **बारिश**
लेखिकाः **सरस्वती नन्दिनी मजुमदार (अनुवाद दुलदुल विश्वास)**
कलाः राफिया बानो
प्रकाशकः एकलव्य, भोपाल
पृष्ठ संख्याः 8, मूल्य 30 रुपये (सचित्र)

यह कपड़े पर रंग बिरंगे धागों से काढ़ी गई चित्रावली है जिसमें गर्मी है, बहुत गर्मी है को सूर्य के

शेष पृष्ठ 32 पर.....

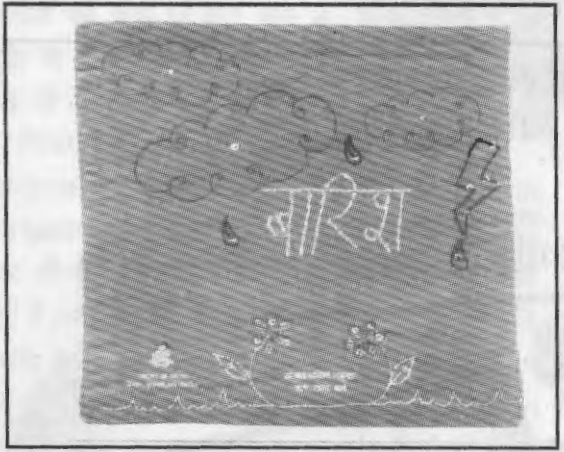

पृष्ठ 30 का शेष.....

गोले की प्रखरता से, फिर बादल आने, हवा चलने, बारिश शुरू होने, बारिश जोर से होने, बिजली चमकने और बरसाती हवा में सोने के भावों को कढ़ाई द्वारा चित्रित किया गया है। कढ़ाई में काले, लाल, हरे रंग प्रयुक्त हुए हैं। इस छोटी सी पुस्तिका द्वारा बारिश के दृश्यों को बहुत ही अच्छे ढंग से दर्शाया गया है। अवश्य ही पुस्तक छोटे बच्चों के मन को मोह लेगी।

–सम्पादक

डॉ0 शिवगोपाल मिश्र द्वारा विज्ञान परिषद् प्रयाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, इलाहाबाद–211002 के लिए सम्पादित, मुद्रित एवं प्रकाशित। नागरी प्रेस 91/186 अलोपीबाग से मुद्रित।